IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का एक अध्ययन

Dr. Brujlali Patel[1] and Ramashankar Yadav[2]
Professor and Head, Department of Hindi[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India[1]
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

सारांषः भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति वैदिक युग से लेकर समसामायिक स्तर तक भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति कभी एक–सी नही रही। बदलते सामाजिक परिवेश के साथ–साथ स्त्रियों की स्थियों भी परिवर्तित होती रही है। इसी समाज में महिलाओं का कभी गौरपूर्ण सम्मान तो कभी उसे दासी के रूप में जीवन यापन करना पड़ा है। वर्तमान परिपेक्ष्य में स्त्रियों में बहुत सुधार हुआ वे सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक दृष्टि से सशक्त हुई है। भारतीय समाज में परिवार तथा परिवार में मॉ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह परिवार की केन्द्र बिन्दू होती है। ''कामकाजी महिला'' से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो आर्थिक उपार्जन हेतु विभिन्न कार्य में संलग्न रहती है। कार्यरत कामकाजी महिलाएं वे महिलाए है जो मानसिक या शारीरिक श्रम का कार्य करती है। जिन्हे उस कार्य के बदले आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। स्त्रियों की इस नही भूमिका से भारतीय समाज में परम्परागत सामाजिक मूल्यों के ढ़ाचे में परिवर्तन आया है।

मुख्य शब्दः उपन्यास, कामकाजी महिला, समस्य, वैदिक युव आदि ।

संदर्भ सूची

1. भारतीय स्त्री का मुक्त का सपना, आशारानी व्होरा, पृ0 18
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार, पृ0 23
3. कालीफार वीमेन, दिल्ली द्वारा 1989 में प्रकाशित पुस्तक रिकास्टिंग वीमेंन ।
4. आशीष नंदी, सती, पृ० 4–5
5. स्त्री संघर्ष का इतिहास– राधा कुमार, पृ0 38
6. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 40
7. सोर्स मैटेरियल फार ए हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवेंट इन इंडिया,
8. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 127–128
9. आर0 के0 शर्मा, नेशनलिज्म, सोशल रिफाम एंड वीमेन, पृ0 6
10. भारतीय स्त्री की मुक्ति का सपना, आशारानी व्होरा, पृ0 153
11. स्त्री मुक्ति का सपना, महादेवी वर्मा, पृ0 73
12. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 352